

বুলুগুল মারাম

হাদিস নম্বরঃ ১০৯৪

পর্ব - ৮ঃ বিবাহ (كتاب النكاح)

পরিচ্ছেদঃ ১০. লি'আন বা পরস্পরের প্রতি অভিশাপ প্রদান - লি'আনের (স্বামী এবং স্ত্রীর পরস্পরের প্রতি অভিশাপ প্রদান করা) বৈধতা এবং এর বিবরণ

আরবী

عَنْ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: سَأَلَ فُلَانٌ فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللَّهِ! أَرَأَيْتَ أَنْ لَوْ وَجَدَ أَحَدُنَا امْرَأَتَهُ عَلَى فَاحِشَةٍ، كَيْفَ يَصْنَعُ؟ إِنْ تَكَلَّمَ تَكَلَّمَ بِأَمْرٍ عَظِيمٍ، وَإِنْ سَكَتَ سَكَتَ عَلَى مِثْلِ ذَلِكَ! فَلَمْ يُجِبْهُ، فَلَمَّا كَانَ بَعْدَ ذَلِكَ أَتَاهُ، فَقَالَ: إِنَّ الَّذِي سَأَلْتُكَ عَنْهُ قَدْ ابْتُلِيتُ بِهِ، فَأَنْزَلَ اللَّهُ الْآيَاتِ فِي سُورَةِ النُّورِ، فَتَلَاهُنَّ عَلَيْهِ وَوَعظُهُ وَذَكَرَهُ، وَأَخْبَرَهُ أَنَّ عَذَابَ الدُّنْيَا أَهْوَنُ مِنْ عَذَابِ الْآخِرَةِ. قَالَ: لَا، وَالَّذِي بَعَثَكَ بِالْحَقِّ مَا كَذَبْتُ عَلَيْهَا، ثُمَّ دَعَاها النَّبِيُّ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - فَوَعظَهَا كَذَلِكَ، قَالَتْ: لَا، وَالَّذِي بَعَثَكَ بِالْحَقِّ إِنَّهُ لَكَاذِبٌ، فَبَدَأَ بِالرَّجُلِ، فَشَهِدَ أَرْبَعَ شَهَادَاتٍ، ثُمَّ تَنَّى بِالْمَرْأَةِ، ثُمَّ فَرَّقَ بَيْنَهُمَا. رَوَاهُ مُسْلِمٌ

صحیح. رواه مسلم (1493) (4) وقد اختصره الحافظ هنا، وهو بتمامه في مسلم: من طريق سعيد بن جبیر قال: سئلت عن المتلاعنين في إمرة مصعب. أيفرق بينهما؟ قال: فما دريت ما أقول: فمضيت إلى منزل ابن عمر بمكة. فقالت للغلام: استأذن لي. قال: إنه قائل. فسمع صوتي. قال: ابن جبیر؟ قلت: نعم. قال: ادخل. فوالله ما جاء بك هذه الساعة إلا حاجة. فدخلت. فإذا هو مفترش برذعة. متوسد وسادة حشوها ليف. قلت: أبا عبد الرحمن! المتلاعنان، أيفرق بينهما؟ قال: سبحان الله! نعم. إن أول من سأل عن ذلك فلان بن فلان. قال: يا رسول الله! أ رأيت أن لو وجد أحدنا امرأته على فاحشة، كيف يصنع؟! إن تكلم تكلم بأمر عظيم، وإن سكت سكت على مثل ذلك. قال:

فسكت النبي صلى الله عليه وسلم فلم يجبه، فلما كان بعد ذلك أتاه، فقال: إن الذي سألتك عنه قد ابتليت به. فأنزل الله عز وجل هؤلاء الآيات في سورة النور: «والذين يرمون أزواجهم...» [النور: 6 – 9] فتلاهن عليه، ووعظه، وذكره. وأخبره أن عذاب الدنيا أهون من عذاب الآخرة. قال: لا. والذي بعثك بالحق ما كذبت عليها. ثم دعاها فوعظها وذكرها، وأخبرها أن عذاب الدنيا أهون من عذاب الآخرة. قالت: لا. والذي بعثك بالحق إنه لكاذب. فبدأ بالرجل، فشهد أربع شهادات بالله إنه لمن الصادقين. والخامسة أن لعنة الله عليه إن كان من الكاذبين. ثم ثنى بالمرأة، فشهدت أربع شهادات بالله إنه لمن الكاذبين، والخامسة أن غضب الله عليها إن كان من الصادقين. ثم فرق بينهما

বাংলা

১০৯৪। ইবনু 'উমার (রাঃ) থেকে বর্ণিত, তিনি বলেন, অমুক ব্যক্তি (উআইমের 'আজলানী) জিজ্ঞেস করে বললেন, হে আল্লাহর রসূল! আপনি কি মনে করেন, আমাদের কেউ যদি তার স্ত্রীকে ব্যভিচারে লিপ্ত পায় তবে সে কি করবে? যদি সে এ কথা ফাঁস করে দেয় তাহলে তা বিরাট ব্যাপার হয়ে যাবে। আর যদি চুপ থেকে যায় তাহলে তাকে এরূপ বিরাট ব্যাপারে চুপ থাকতে হবে। (কথা শুনে) নবী সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম তাকে কোন উত্তর দিলেন না। এরপর আর একদিন সে এসে বললো, যে জিজ্ঞেস আমি আপনাকে করেছিলাম তাতেই আমি আজ পরীক্ষার সম্মুখীন হয়েছি। অতঃপর আল্লাহ (এর সমাধানকল্পে) সূরা নূরের আয়াতগুলো অবতীর্ণ করলেন।

নবী সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম তাকে ঐসব আয়াত পড়ে শুনালেন এবং তাকে উপদেশ দিলেন ও জানালেন যে, পরকালের শাস্তি থেকে ইহকালের শাস্তি অনেক হালকা। উআইমের (রাঃ) বললেন- না, আপনাকে যিনি সত্য সহকারে পাঠিয়েছেন তার শপথ আমি তার উপর মিথ্যা বলছি না। তারপর নবীসাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম তার স্ত্রীকে ডাকলেন, অনুরূপভাবে তাকে উপদেশ দিলেন। সে বললো না-সত্য সহকারে যে আল্লাহ আপনাকে পাঠিয়েছেন তাঁর শপথ। তিনি (আমার স্বামী) মিথ্যাবাদী। এরপর নবী সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম পুরুষের চারটি সাক্ষী আল্লাহর শপথযোগে গ্রহণ আরম্ভ করলেন তারপর দ্বিতীয় পর্যায়ে মেয়েটির সাক্ষ্য আল্লাহর কসম যোগে চারবার গ্রহণ করে তাদের মধ্যের বিবাহবিচ্ছেদ করে দিলেন।[1]

ফুটনোট

[1] বুখারী ৪৭৪৮, ৫৩০৬, ৫৩১১, ৫৩১৩, ৫৩১২, ৫৩১৪, মুসলিম ১৪৯৩, ১৪৯৪, তিরমিযী ১২০২, ১২০৩, নাসায়ী ৩৪৭৩, ৩৪৭৪, ৩৪৭৫, আর দাউদ ২২৫৭, ইবনু মাজাহ ২০৬৯, আহমাদ ৪০০, ৪৪৬৩, ৪৫৭৩, মালেক

১২০২, দারেমী ২২৩১, ২২৩২।

হাদিসের মান: সহিহ (Sahih) পুনঃনিরীক্ষিত

পাবলিশারঃ তাওহীদ পাবলিকেশন □ বর্ণনাকারীঃ আবদুল্লাহ ইবন উমর (রাঃ)

🔗 Link — <https://www.hadithbd.com/hadith/link/?id=70905>

📖 হাদিসবিডির প্রজেক্টে অনুদান দিন